Date
2/05/2020

Subject - Contemporary India and Education
Topic - Population Education

B.Ed.
Ist Year

जनसंख्या शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

जनसंख्या शिक्षा में शिक्षक अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन निम्न प्रकार से कर सकता है —

1. शिक्षक को जनसंख्या के विषय में सही, पूर्ण और व्यवस्थित तथा तार्किक जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
2. शिक्षक को चाहिए कि वह जनसंख्या शिक्षा को अपने विषय के साथ सम्बद्ध करके पढ़ाये।
3. शिक्षक को छात्रों को सामाजिक सर्वेक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. शिक्षक को जनसंख्या नियन्त्रण के लिए अपने विद्यार्थियों और समाज के लोगों को जागरूक करना चाहिए।
5. शिक्षक को विभिन्न पाठ्यक्रम क्रियाओं का आयोजन करके जनसंख्या शिक्षा के विषय में ज्ञान प्रदान करना चाहिए।
6. शिक्षक को चित्र, मॉडल, रेखाचित्र फिल्मों, दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करके छात्रों की रुचि जनसंख्या शिक्षा में उत्पन्न करनी चाहिए,
7. शिक्षक को युवा शक्ति को उत्पादक कार्यों में लगाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे वे देश के चहुँमुखी विकास में अपना योगदान दें,

जनसंख्या शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षक अपनी प्रभावी भूमिका तभी निभा सकता है जब वह अपने विषय का विशेषज्ञ, हो, जनसंख्या शिक्षा का पूर्ण ज्ञान, सम्बन्धी नीति का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

भारत मे जनसंख्या शिक्षा की समस्याएँ :-

(1) भारत वासीयो का सकुंचित दृष्टिकोण।
(2) जनसंख्या शिक्षा से सम्बान्धित विषय-वस्तु अस्पष्ट है।
(3) यह शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य, कुशल और प्रशीक्षित शिक्षकों का अभाव है।
(4) जनसंख्या शिक्षा के प्रचार - प्रसार मे कमी।
(5) महिलाओ की अशीक्षिता एवं जागरूकता का अभाव।
(6) अल्पसंख्यको का समर्थन न मिलना।
(7) अशीक्षित लोग जनसंख्या शिक्षा के महत्तव को नही समझ पा रहें है।
(8) जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र मे सरकार की उदासीनता। सरकार ने निश्चित और गम्भीर नीति तथा कठोर नियम बनाकर कार्यान्वयन नही किया गया।

उपरोक्त समस्याएँ समाप्त करने के लिए जनसंख्या शिक्षा का प्रचार - प्रसार कठोरता के साथ पालन कर कराना चाहिए।

(भारत की जनसंख्या नीति)

सर्वप्रथम
सन 1949 मे "भारतीय परिवार नियोजन संघ" की स्थापना की गई। सन 1956 से 1961 के बीच परिवार नियोजन हेतु 'एक्शन कम रिसर्च' नामक योजना सन्चालित की गई और एक "फैमिली प्लानिंग बोर्ड" बनाया गया। 1969 से 1974 के बीच जन्म दर मे कमी करने के प्रयास किये गये। 1970 मे इस हेतु जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ बनाया गया। पंचम पंचवर्षीय योजना (1974-79) मे परिवार नियोजन को एक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप मे सम्मिलित कर अप्रैल 1976 मे राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा की गयी।

Scanned with CamScanner

* भारत में सचांलित विभिन्न जनसंख्या नीतियाँ *

1. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 1976

16 अप्रैल 1976 को तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मंत्री डा० कर्ण सिंह ने लोक सभा मे राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा की। नीति का मुख्य उद्देश्य उच्च जनसंख्या वृद्धि दर को प्रभावकारी ढंग से कम करने से सम्बन्धित था। तत्कालीन 35 व्यक्ति प्रति हजार की अनुमानित वृद्धि की दर को 25 व्यक्ति प्रति हजार करके 1984 तक वार्षिक वृद्धि दर को 2.2 प्रतिशत से घटाकर 1.4 प्रतिशत करना था।

2. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 1981

15 जून से 17 जून, 1981 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन मे केन्द्रीय स्वास्थ्य परिषद और केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड का संयुक्त सम्मेलन आयोजित किया गया। इस नीति का उद्देश्य सन 2000 तक जन्म दर, प्रति 21 हजार तक लाना था। सन 2000 तक 60 प्रतिशत दम्पत्तियों को परिवार नियोजन के किसी न किसी कार्यक्रम से जोड़ना।

3. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000

21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ होने पर भारत की आबादी 1 अरब से उपर होने के अनुमान को ध्यान मे रखते हुए 14 फरवरी 2000 को राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000, की घोषणा तत्कालीन भारत सरकार द्वारा दी गयी। जिस नीति के तीन उद्देश्य निर्धारित किए गए।

(1) तत्कालिक उद्देश्य ⇒ बुनियादी प्रजनन तथा बाल स्वास्थ्य परिचर्या के लिए एकीकृत सेवा प्रदान करने की व्यवस्था करना।

(2) मध्यकालिक उद्देश्य ⇒ सन 2010 तक प्रजननता दर को घटाना।

(3) दीर्घकालिक उद्देश्य ⇒ सन, 2045 तक स्थिर जनसंख्या का उद्देश्य प्राप्त करना।

(Complete)

[signature]
21/05/2020

Scanned with CamScanner